रंगीला भारत

टेसू और झेंझी

लेखक एवं संकलनकर्ता

पं. रवि शर्मा एडवोकेट

उत्कर्ष प्रकाशन

ISBN: 978-93-

© सुरक्षित

मुद्रक एवं प्रकाशक : **उत्कर्ष प्रकाशन**
मुख्य कार्यालयः
142, शाक्य पुरी, कंकरखेड़ा,
मेरठ कैन्ट-250001 (उ0प्र0)
फोनः 8791681996
प्रशासनिक कार्यालयः
लोहिया गली-4, बाबरपुर, शाहदरा,
दिल्ली-110 094 फोनः 8218114205

ई-मेल : uttkarshprakashan@gmail.com

वेबसाइट : utkarshprakashan.in

प्रथम संस्करण : 2021

मूल्य : ₹ 80

लेखक/संकलनकर्ता : **पं. रवि शर्मा, एडवोकेट**
शुक्लागंज, उन्नाव उ.प्र. मो. 9839382750

पूर्वालोक

यह बात तो भारत ही क्या भारत से बाहर के देशों मे भी विख्यात है कि भारत एक त्योहारों और खुशियों का देश है, भारत में वर्ष में शायद कोई भी दिन ऐसा हो, जिस दिन भारत के किसी कोने में कोई न कोई त्योहार न हो। कुछ त्योहार जैसे होली, दीपावली, ईद, लोहिड़ी, क्रिसमस, राम नवमी, कृष्ण जन्माष्टमी आदि की गणना प्रमुख त्योहारों मे होती है। वहीं पर कुछ त्योहार ऐसे भी होते हैं जो समुदाय विशेष या क्षेत्र विशेष में अधिक प्रचलित होते हैं। जैसे तमिलनाडु का पोंगल और केरल का ओड़म आदि। इसी तरह से किन्नर समुदाय द्वारा कोवगम (तमिलनाडु) में मनाया जाने वाला त्योहार, कामाख्या जी (असम) में तांत्रिक समुदाय का लगाने वाला अंबुवाची मेला एक विशेष समुदाय के त्योहारों के स्पष्ट उदाहरण हैं।

त्योहारों की बात हो और ब्रज का नाम न आए ऐसा तो शायद ही सम्भव हो। ब्रज क्षेत्र के नागरिक तो स्वभाव से ही हँसमुख होते हैं। उन्हें देखकर तो ऐसा लगता है कि जैसे दुख क्या है वो जानते ही नहीं। किन्तु सत्य यह है कि दुख और सुख हर जगह विद्धमान हैं। ब्रज के लोग खुश रहने के छोटे से छोटे अव्यव को भी नहीं छोड़ते और फिर यदि कोई कहानी, कथानक, लीला आदि उनके प्रिय इष्ट कान्हा, कन्हैया, नंदलाल से जुड़ी हो तो वो भला उसको कैसे छोड़ सकते हैं।

ऐसी ही कुछ कहानियों, कथानकों से निर्मित है **'टेसू और झेंझी'** के विवाह का त्योहार। टेसू और झेंझी के विवाह की अलग-अलग क्षेत्रो में अलग-अलग कहानियाँ प्रचलित हैं, जिसकी चर्चा हम अगले अध्याय में करेंगे किन्तु रीतियाँ हर क्षेत्र में एक समान हैं। कहने को तो टेसू और झेंझी के विवाह के इस त्योहार को किशोर और किशोरियों के उत्सव के रूप मे देखा जाता है किन्तु जिस क्षेत्र मे इसे मनाया जाता है, वहाँ के सभी नागरिक, बच्चे, बूढ़े और जवान समान रूप से शामिल होते हैं। अंतर बस इतना है कि कोई कम समय देता है कोई अधिक।

यह त्योहार वैसे तो ब्रज का ही मुख्य त्योहार है किन्तु ब्रज क्षेत्र ने धीरे-धीरे इसकी भव्यता खो दी है। धन्य है बुंदेलखंड और इटावा की वह धरती जिसने आज भी इस त्योहार को विरासत के रूप में सँभाल कर रखा है।

समय के साथ-साथ शहरी क्षेत्र तो इस त्योहार को लगभग भूल ही गया है किन्तु बुंदेलखंड के गांवों में रक्षावंधन के बाद से ही टेसू और झेंझी के गीत के स्वर गूंजने लगते हैं। बेटियाँ झेंझी और बेटे टेसू की तैयारी करने लगते हैं।

-पं. रवि शर्मा एडवोकेट

टेसू और झेंझी

तलवार लिए मूंछों पर ताव देता उसका टेसू और उसका तो घोड़े पर सवार है, तीसरे का मुकुट पहने है, और उसका देखो कैसे सजा-धजा दूल्हा बने घूम रहा है, ए री अपनी झेंझी न दिखाएगी, न झेंझी तो शादी के बाद ही देखवे कूँ मिलेगी, ए चच्चा ने का दियो, पाँच रुपैया, और अम्मा ने तेल। यह बच्चों का बतकहा रहता है टेसू के दिनों में।

रंग-विरंगे टेसुओं के साथ बाल मन का उत्साह और अपने-अपने टेसू को संभालना-सजाना, घर-घर जाकर टेसू के गीत गाकर टेसू की शादी के लिए चन्दा इकट्ठा करना और फिर कितना मिला का हिसाब रखना कितने कठिन कार्य हो जाते हैं टेसू के दिनों में। बेटियाँ भी अपनी झेंझी रानी को सजाकर मुकुट पहनाती हैं और घर के आँगन में जाकर नाच-गा कर झेंझी की शादी के लिए चंदा इकट्ठा करती हैं। उनके लिए सबसे कठिन कार्य है कि कोई लड़का टेसू-झेझीं की शादी से पहले उनकी झेंझी रानी का मुंह न देख ले।

बहुत विचार किया क्यों मनाया जाता होगा यह त्योहार ? क्या बोध डालता होगा बाल मन पर ? क्या मात्र किस्से कहानियों को जीवित रखने के लिए या फिर कुछ और बात है। शायद इससे भारतीय संस्कृति के द्वारा पोषित शादियों की झलक बालमन पर अंकित करने का सुगम रास्ता खोजा गया है। इसके अलावा इसमें हस्त कलाकारी, चित्रकला, गायन-वादन, नृत्य, पाक कला, धन संग्रह आदि का भी समावेश है जो कि बाल मन और किशोरों को सामाजिक ज्ञान देता है।

आज जब मोबाइल और इंटरनेट के युग में जहां बच्चे अपनी आउटडोर खेलों और मूल संस्कृति को भूलते जा रहे हो, समाज को ऐसे खेलों, त्योहारों की महती आवश्यकता है। आज हर अभिभावक अपने बच्चों की इंटरनेट की लत से परेशान है या ऊब चुका है, ऐसे में यदि इन त्योहारों की तरफ अभिभावकों का रुझान होता है तो एक बार फिर हम अपने बच्चों को उचित मार्ग दे सकते हैं।

आज हम छोटी-छोटी खुशियाँ भौड़ी फिल्में देखने, ऊलजलूल गानों और अश्लील साहित्य में खोजते है किन्तु हमारे समाज में पहले से ही खुशियों के कई पारंपरिक, साहित्यिक और सामाजिक साधन उपलब्ध हैं, जो अच्छे समाज के निर्माण में भी सहायक हैं।

टेसू और झेंझी के विवाह का यह त्योहार समाज के लिए आवश्यक कई रीतियों का निर्वाह करता है। बाल मन पर अनुकूल प्रभाव हेतु अपने बच्चों को टेसू-झेझी त्योहार मनाने के लिए अवश्य प्रेरित करें। स्वस्थ सोच ही स्वस्थ समाज दे सकती

है।

कहाँ मनाया जाता है ?

टेसू और झेंझी के विवाह का त्योहार मूलतः ब्रज मण्डल का त्योहार है, किन्तु अब यह बुंदेलखंड के ग्रामीण क्षेत्र, इटावा (उ०प्र०) के ग्रामीण क्षेत्र, फिरोजाबाद (उ०प्र०) आदि जगहों पर प्रमुखता से मनाया जाता है।

कब मनाया जाता है ?

पूर्व में यह त्योहार रक्षाबंधन से प्रारम्भ होकर क्वार मास की पूर्णिमा तक चलता था। किन्तु समयाभाव के कारण अब यह त्योहार विजयदशमी से प्रारम्भ होकर क्वार मास की पूर्णिमा तक ही मनाया जाता है।

कैसे मनाया जाता है ?

पूर्व में जब यह त्योहार डेढ़ महीने चलता था तब किशोर अपने हाथों से टेसू तैयार करते थे और किशोरियाँ झेंझी। किशोरों का एक माह तो टेसू को बनाने और रंगरोगन में ही निकल जाता था, किन्तु किशोरियाँ अपनी झेंझी तैयार करने के बाद भी शाम को एक चौकोर खाने मे गेहूँ के आटे से सूरज, चंद्र, तरैया, बनाकर गीत गाने का समय निकाल ही लेती थी। किशोरियाँ दिन में झेंझी की शादी के लिए गोबर के उपले भी तैयार करती थी। गीत गाते हुये अपने द्वारा बनाए चौक को फूल इत्यादि से सजाना भी किशोरियों का काम था। कहीं-कहीं पर दीवाल पर भी मिट्टी या गोबर से झेंझी (एक राजकुमारी) की आकृति उकेरी जाती थी।

किन्तु समय के साथ-साथ ही यह प्रथाएँ बंद हो गई और टेसू और झेंझी के निर्माण का कार्य कुम्हारों के हाथ में आ गया, जो कि आज भी अनवरत चल रहा है।

टेसू- एक तीन लकड़ियों पर बनी मानव आकृति जो कि पुरातन महाराजा से मेल खाती हो को टेसू कहते हैं। टेसू को तरह-तरह से सजाया जाता है, सबसे आवश्यक यह है कि टेसू के पास एक पटुका नुमा कपड़ा अवश्य होना चाहिए। एवं बीच में एक दीया रखने की व्यवस्था भी होनी चाहिए। लकड़ियों को बीच से इस प्रकार बांधा जाता है कि उनके नीचे के भाग में दो पैर और एक टेकुआ (जिस से टेसू खड़ा हो सके) बनाया जाता है और ऊपर के भाग में एक लकड़ी पर सिर और बाकी दोनों पर दो हाथ बनाए जाते हैं, बीच में मिट्टी का दीपक रखने का स्थान बनाया जाता है।

झेंझी- एक कच्ची पटकी में छेद करके झेंझी के आँख, नाक, मुंह बनाया जाता है और उसे रंगों द्वारा एक सुंदर लड़की का रूप दिया जाता है। इसके अलावा भी झेंझी में आगे से पीछे तक कई जगह छेद बनाए जाते हैं जिस से उसमें हवा

का आवागमन बना रहे। उसके उपरांत झेंझी को एक मुकुट भी लगाया जाता है। फिर उस सजी हुई झेंझी के अंदर थोड़ी सी बालू डाल कर एक जलता हुआ दीपक रखा जाता है। ऊपर से एक मिट्टी के ही सजे हुये सकोरे से झेंझी को ढाक दिया जाता है। किशोरियाँ झेंझी को किसी डिब्बे या बर्तन में कपड़े से ढककर इस प्रकार रखती हैं कि कोई उनकी झेंझी देख न सके।

दशहरे के दिन कुम्हार के यहाँ से किशोर टेसू और किशोरियाँ झेंझी खरीदती हैं। उस के उपरांत शाम होते ही यह अपना-अपना समूह बनाकर मोहल्ले-पड़ोस के घरों में टेसू और झेंझी की शादी के लिए चंदा इकट्ठा करने निकल पड़ते हैं। विशेष बात यह है कि किशोर अपने टेसू को लेकर किसी के घर के अंदर नहीं जा सकते, उनको दरवाजे के बाहर से ही चन्दा मांगना पड़ेगा किन्तु किशोरियाँ किसी के भी घर के आँगन में अपनी झेंझी के साथ जा सकती हैं।

'टेसू अटर करे, टेसू मटर करे, टेसू लै की टरे' जैसी काव्यमयी आवाज से किशोर अपने आने की सूचना घर वालो को देते हैं, घर के सदस्य आने के बाद उनसे टेसू के गीत सुनते हैं और फिर चंदे के रूप में धन, आटा, तेल या घी देते हैं, किशोरों का समूह अगले घर की तरफ चला जाता है।

इसी प्रकार किशोरियाँ भी 'अड़ता रहा टेसू, नाचती रही झेंझी', 'हम लेने आए दामडिया, नाच मेरी झेझरिया' गाकर घर के आँगन में जाकर चंदे की मांग करती हैं, उस घर की महिलाएं उनसे झेंझी के गीत गाने-नाचने आदि को कहती हैं, और मनोरथ पूरा होने पर वे धन, आटा, तेल, या घी देती हैं।

यही क्रम चतुर्दशी तक चलता है, फिर आती है पूर्णिमा यानि टेसू और झेंझी की शादी की रात। कहीं-कहीं पर तो टेसू और झेंझी की शादी वास्तविक शादी से भी अधिक धूमधाम से मनाई जाती है। जिसमें इन बच्चों के साथ-साथ इनके माता-पिता, बाबा-दादी, परिवारीजन, कहने का तात्पर्य सभी लोग एकत्रित होते हैं, महिलाएं भोजन बनाती हैं, जिसमें किशोरियाँ भी बराबर का साथ देती हैं और पुरुष समाज किशोरों के साथ साज-सजावट का कार्य देखते हैं। इस शादी को देखने के लिए कभी-कभी दूसरे गांवों के भी लोग एकत्रित होते हैं, कि इसके यहाँ अच्छी शादी हुई।

कहीं-कहीं पर यह टेसू-झेंझी का खेल नवमी से पूर्णमासी तक खेला जाता है, 16 दिन तक किशोरियाँ गोबर या मिट्टी से चाँद-तरैया और सांझी (झेंझी) माता बनाकर पूजती हैं। नवमी को सुअटा की प्रतिमा बनाती हैं।

हिंदू रीति-रिवाजों के अनुसार लड़के थाली-चम्मच बजाकर टेसू की बारात निक. ालते हैं। वहीं लड़कियां भी शरमाती-सकुचाती झिंझिया रानी को भी विवाह मंडप

में ले आती हैं। फिर शुरू होता है ढोलक की थाप पर मंगल गीतों के साथ टेसू-झेंझी का विवाह। सात फेरे पूरे भी नहीं हो पाते और लड़के टेसू का सिर धड़ से अलग कर देते हैं। वहीं झेंझी भी अंत में पति वियोग में सती हो जाती है।

चौक पूर कर वेदी बनाकर पंडित और नाई की उपस्थित में मंत्रोचार के बीच टेसू और झेंझी का विवाह सम्पन्न होता है। इसके पहले नाई दावत और कन्यादान का बुलावा भी देता है, कुछ धार्मिक लोग झेंझी को बेटी मानते हुये कन्यादान भी करते हैं। दावत के साथ ही टेसू और झेंझी का विवाह संपन्न हो जाता है। खील, बताशे, रेवड़ी बांटी जाती है। शादी के समय गाये जाने वाले लोक गीत भी गाये जाते हैं। सुबह को टेसू और झेंझी को किसी नदी या तालाब में विसर्जित कर दिया जाता है।

क्यों मनाया जाता है ?

टेसू और झेंझी कर शादी पर समाज में कई पौराणिक कथायें प्रचलित हैं, लोग इन कथाओं को महाभारत काल से जोड़ते हैं-

कथा नंबर 1- इटावा के आसपास में यह कहानी प्रचलित है कि हिडिंबा और भीम के विवाह के उपरांत एक पुत्र घटोत्कच का जन्म हुआ जिसके पुत्र का नाम राजा टेसू या बब्रुवाहन था। जनश्रुति के अनुसार, महाभारत में श्रीकृष्ण ने सुदर्शन चक्र द्वारा राजा टेसू या बब्रुवाहन का वध कर दिया। जब भीम को पता चला कि टेसू मेरा नाती है तो भीम के कहने पर श्रीकृष्ण ने टेसू को पुनर्जीवित कर दिया और वरदान दिया कि तुम्हारी शादी के बाद ही औरों की शादी होगी इसीलिए इसको टिसुयारी पूनो भी कहा जाता है। इसी तिथि के बाद शादी-विवाह के शुभ कार्य आयोजित होते हैं।

कथा नंबर 2- माना जाता है कि टेसू का आरम्भ महाभारत काल से ही हो गया था। कहा जाता है कि कुन्ती को विवाह से पूर्व ही दो पुत्र उत्पन्न हुए थे जिनमें पहला पुत्र बब्बरावाहन था जिसे कुन्ती जंगल में छोड़ आई थी। वह बड़ा विलक्षण बालक था। वह पैदा होते ही सामान्य बालक से दुगनी रफ्तार से बढ़ने लगा और कुछ सालों बाद तो उसने बहुत ही उपद्रव करना शुरू कर दिया। पाण्डव उससे बहुत परेशान रहने लगे तो सुभद्रा ने भगवान कृष्ण से कहा कि वे उन्हें बब्बरावाहन के आतंक से बचाएं, तो कृष्ण भगवान ने अपने सुदर्शन चक्र से उसकी गर्दन काट दी। परन्तु बब्बरावाहन तो अमृत पी गया था इसलिये वह मरा ही नहीं। तब कृष्ण ने उसके सिर को छेकुर के पेड़ पर रख दिया। लेकिन फिर भी बब्बरावाहन शान्त नहीं हुआ तो कृष्ण ने अपनी माया से सांझी को उत्पन्न किया और टेसू से उसका विवाह रचाया।

कथा नंबर 3– बब्बरावाहन, भीमसेन का किसी राक्षसी से हुआ पुत्र था जिसे घटोत्कच भी कहा गया है। यह परमवीर और दानी पुरुष था। उसकी यह आन थी कि वह हमेशा युद्ध में हारने वाले राजा की ओर से लड़ता था। जब महाभारत का युद्ध शुरू हुआ तो कृष्ण यह जानते थे कि यदि बब्बरावाहन कौरवों की ओर मिल गया तो पाण्डव युद्ध कभी नहीं जीत पायेंगे, इसलिये एक दिन ब्राह्मण का वेश धरकर बब्बरावाहन के पास गये और उससे उसका परिचय मांगा। तब बब्बरावाहन कहने लगा कि वह बड़ा भारी योद्धा और महादानी है। तो कृष्ण ने उससे कहा कि यदि तुम ऐसे ही महादानी हो तो अपना सिर काट कर दे दो और तब बब्बरावाहन ने अपना सिर काट कर कृष्ण को दे दिया परन्तु यह वचन मांगा कि वह उसके सिर को ऐसी जगह रखेंगे जहां से वह महाभारत का युद्ध देख सके। कृष्ण ने बब्बरावाहन को दिये वचन के अनुसार उसका सिर छेकुर के पेड़ पर रख दिया, जहां से युद्ध का मैदान दिखता था। परन्तु जब भी कौरवों पाण्डवों की सेनाएं युद्ध के लिये पास आती थी तो बब्बरावाहन का सिर यह सोचकर कि हाय कैसे-कैसे योद्धा मैदान में हैं पर मैं इन से लड़ न सका, जोर से हँसता था। कहते हैं उसकी हँसी से भयभीत होकर दोनों सेनाएँ मीलों तक पीछे हट जाती थीं। इस प्रकार यह युद्ध कभी भी नहीं हो पायेगा यह सोचकर कृष्ण ने जिस डाल पर बब्बरावाहन का सिर रखा हुआ था उसमें दीमक लगा दी। दीमक के कारण सिर नीचे गिर पड़ा और उसका मुख दूसरी ओर होने के कारण उसे युद्ध दिखाई देना बन्द हो गया। तब कहीं जाकर महाभारत का युद्ध आरम्भ हो सका।

कथा नंबर 4– बहुत साल पहले किसी गांव में एक ब्राह्मण परिवार रहता था। परिवार में लगभग साठ सत्तर व्यक्ति थे जो सभी प्रकार से सम्पन्न थे। इनमें से छोटे भाई की पत्नी मर चुकी थी, उसे बड़े भाइयों की पत्नियाँ बहुत परेशान करती थी इससे दुखी होकर वह अपनी पुत्री को लेकर घर छोड़ कर दूसरे गांव चला गया यह गांव जंगल के किनारे एक सुन्दर गांव था। उस जंगल में एक राक्षस रहता था। ब्राह्मण की रूपवान कन्या जब एक दिन पानी भरने गई तब उस राक्षस ने उसे देख लिया और उस पर मोहित हो गया। उसने लड़की से उसका परिचय लिया और उसके पिता से मिलने की इच्छा प्रकट की तब लड़की ने कहा कि उसके पिता शाम के समय घर मिलते हैं। राक्षस शाम को ब्राह्मण से मिलने गया। ब्राह्मण बहुत घबराया उसने सोचा यह राक्षस मना करने पर मानने वाला नहीं इससे उसने राक्षस से कहा कि विवाह तो हो जायेगा। परन्तु कुछ रस्में पूरी करनी पड़ेगी इसलिये सोलह दिन का समय लगेगा। इस बीच ब्राह्मण ने अपने परिवार के लोगों को सहायता के लिये बुलाने का पत्र लिख दिया। क्वांर माह के यह सोलह दिन सोलह श्राद्ध के दिन माने जाते हैं। और इन दिनों ब्राह्मण की लड़की जो खेल गोबर की

थपलियों से खेली वह सांझी या चन्दा तरैयां कहलाया और तभी से सांझी खेलने की परम्परा का आरंभ हुआ। सोलह दिन बीतने पर राक्षस आया परन्तु ब्राह्मण के परिवार वाले नहीं पहुंच पाये इसलिये उसने फिर बहाना की अब उसकी लड़की नौ दिन मिट्टी के गौर बनाकर खेलेगी। राक्षस नौ दिन बाद फिर वापिस आने की कह कर चला गया। तभी से यह नौ दिन नौराता कहलाये और इन दिनों सुअटा खेलने की प्रथा शुरू हुई। नौ दिन भी खत्म हो गये इस पर ब्राह्मण ने उससे कहा अब केवल आखिरी रात रह गई है। अब पांच दिन तुम और मेरी बेटी घर घर भीख मांगोगे तब शरद पूर्णिमा के दिन तुम्हारी शादी हो सकेगी, राक्षस इस बात के लिये भी मान गया और तभी से दशहरे से पूर्णिमा तक उस राक्षस के नाम पर टेसू और ब्राह्मण की लड़की पर झांझी मांगने की प्रथा का आरंभ हुआ। इस प्रकार जब भीख मांगते पांच दिन बीत गये और ब्राह्मण के परिवार के लोग नहीं आये तो ब्राह्मण निराश हो गया और उसे अपनी पुत्री का विवाह राक्षस से करने के अलावा कोई रास्ता दिखाई नहीं दिया तो शरद पूर्णिमा के दिन उसने विवाह निश्चित कर दिया। लेकिन अभी विवाह के साढ़े तीन फेरे ही पड़े थे कि ब्राह्मण के परिवार के लोग आ गये और उन्होंने उस राक्षस को मार डाला। चूंकि उनकी लड़की का आधा विवाह राक्षस से हो चुका था इसलिये उसे भ्रष्ट मान कर उन्होंने उसे भी मार डाला इसलिये टेसू और झांझी का पूरा विवाह नहीं होने दिया जाता है। उन्हें बीच में फोड़ दिया जाता है। ब्राह्मण के भाइयों ने ब्राह्मण को भी मार डाला। इसीलिये नौराता में मिट्टी के गौर बनाकर खेला जाने वाला सुअटा टेसू के विवाह के बाद उस ब्राह्मण पिता के प्रतीक सुअटा के रूप में फोड़ दिया जाता है।

लेखकीय कथा- ध्यान देने पर ऊपर की कथायें एक किवदंती मात्र प्रतीत होती हैं, क्योंकि महाभारत कथा के अनुसार बब्रूवाहन घटोत्कच का पुत्र न होकर अर्जुन और चित्रांगदा का पुत्र था। एक रात का विवाह तो अर्जुन और उलूपी पुत्र इरावन का हुआ था। भगवान कृष्ण ने सिर घटोत्कच पुत्र बर्बरीक का काटा था। अतः कथाओं और वास्तविकता में मेल न होने के कारण मेरा (लेखक) का मानना मात्र यह है कि उक्त त्योहार विवाह समारोह प्रारम्भ होने से पूर्व किशोर-किशोरियों को अपनी कुल रीति-लोक रीति सिखाने का एक मार्ग मात्र है, जिसमें सभी की प्रतिभाएं भी निकल कर सामने आती हैं।

टेसू के गीत

आगरे को जाएँगे, चार कौड़ी लाएँगे
कौड़ी अच्छी हुई तो, टेसू में लगाएँगे,
टेसू अच्छा हुआ तो, गाँव में घुमाएँगे,
गाँव अच्छा हुआ तो, चक्की लगबाएँगे,
चक्की अच्छी हुई तो, आटा पिसवाएँगे,
आटा अच्छा हुआ तो, पूए बनवाएँगे,
पूए अच्छे हुए तो, गपगप खा जाएँगे,
खाकर अच्छा लगा तो बाग घूमने जाएँगे,
बाग अच्छा हुआ तो, माली को बुलाएँगे,
माली अच्छा हुआ तो, आम तुड़वाएँगे,
आम अच्छे हुए तो, घर भिजवाएँगे,
घर भिजवाकर, अमरस बनवाएँगे,
अमरस अच्छा हुआ तो, आगरे ले जाएँगे।
आगरे को जाएँगे, चार कौड़ी लाएँगे ।

□□□

टेसू रे घंटार बजइयो, इक नगरी इक गाँव बसइयों
बस गए तीतर, बस गए मोर, फिरत डुकरिया लै गए चोर
चोरन के घर मे खेती भई, खाय डुकरिया मोटी भई
मोटी हुइ के मायके आई, माय कहे मेरी लाड़ो आई,
सिर के बाल कहाँ धरि आई।

□□□

मेरे टेसू ने बीने थे कंकड़, जिसमें निकले गौरी शंकर
गौरी शंकर ने चीरा था लट्ठा, जिसमें निकला नाई का पट्ठा
नाई के पट्ठे ने बनाए थे बार, जिसमें निकला छिद्दा कुम्हार
छिद्दा कुम्हार ने बनाई थी डोरी, जिसमें निकली बीबी अंगूरी
बीबी अंगूरी ने काता था सूट, जिसमें निकले पचासों भूत ।

□□□

टेसू रे टेसू घंटार बजाना, इक नगरी दस गाँव बसाना।
उड़ गए तीतर उड़ गए मोर, गबरू बैल को ले गए चोर,
चोरों के घर खेती हुई, खाके चोरनी मोटी हुई,
मोटी होके मायके आई, देख हँसे सब लोग लुगाई,
गुस्सा होके पहुँची दिल्ली, दिल्ली से लाई दो बिल्ली,
एक बिल्ली कानी, सब बच्चों की नानी,
नानी नानी टेसू आया, संग में अपने झाँझी लाया,
मेरा टेसू यहीं अड़ा, खाने को माँगे दही बड़ा,
दही बड़ा हो हइया, झट निकाल रुपइया,
रुपए के तो ला अखरोट, मुझको दे दे सौ का नोट।

□□□

आगरे की हाट में जाटनी बिहार की,
झुमके उसके लाख के तो नथनी हजार की।
बैठ के अपने रंगमहल में ढोलकी बजाती,
ढोलकी की तान अपने तोते को सुनाती।
तोता बैठा रेल में तो मैना भी संग में चढ़ी,
सीटी मार के धुआँ उड़ाती रेल फौरन चल पड़ी।
रेल के पहले ही डिब्बे में टेसू जी थे खड़े हुए,
तीन टाँग और काली टोपी जिसमें लड्डू पड़े हुए।
लड्डू पेड़े खाने वाले काले हैं कल्यान जी,
दूध दूधिया पीने वाले गोरे हैं मलखान जी।
लाल सिंदूर लगा लंका में कूद पड़े हनुमान जी,
जय बोलो सीता मइया की लंका जीते राम जी

□□□

इमली की जड़ से निकली पतंग, नौ सौ मोती नौ सौ रंग।
एक रंग मैंने माँग लिया, दिल्ली जाय पुकार किया।
दिल्ली से आया काला कोट, मार सिकंदर पहली चोट।
कोट चोट चूल्हे की ओट, चूल्हा माँगे सौ का नोट।

□□□

टेसू आए बानवीर, हाथ लिए सोने का तीर,
एक तीर से पत्ते झाड़े, कान्हा जी देखत रहे ठाड़े।
कान्हा जी की बन्सी बाजी, राधा छून छनाछन नाची,
एक घुँघरू टूट गया, दूध का मटका फूट गया।
या तो जल्दी मटका जोड़ो, या फिर अपना बटुआ खोलो,
रुपया धेली जो कुछ हो, टेसू बीर के नाम पे दो।

□□□

मेरा टेसू यहीं अड़ा, खाने को माँगे दही बड़ा,
सूख गया मेरा टेसू, एक टाँग पर खड़ा खड़ा।
टेसू को लोमड़ी काट गई, दद्दू की हँडिया चाट गई,
हँडिया रखी थी खटिया पे, दद्दू की खटिया घाट गई,
खटिया बड़ी के दद्दू बड़ा, मेरा टेसू यहीं अड़ा।
चन्दा दे दो, चन्दा दे दो .....
मेंढक बोले टर्री टर्री, नाई की मूँछें हरी हरी,
गाय की पूँछ पे धान उगा, गाय ने किसकी मूँछ चरी,
अजी मूँछ बड़ी के नाई बड़ा, मेरा टेसू यहीं अड़ा।
चन्दा दे दो, चन्दा दे दो .....

□□□

टेसू राजा बीच बाजार, खड़े हुए ले रहे अनार।
इस अनार में कितने दाने? जितने हों कम्बल में खाने।
कितने हैं कम्बल में खाने? भेड़ भला क्यों लगी बताने।
एक झुंड में भेड़े कितनी? एक पेड़ पर पत्ती जितनी।
एक पेड़ में कितने पत्ते? धोबी के घर जितने लत्ते।
धोबी के घर कितने लत्ते? जितने कलकत्ते में कुत्ते।
बीस लाख तेईस हजार, दाने वाला एक अनार।
टेसू राजा कहें पुकार, लाओ मुझको दे दो चार।

□□□

टेसू माँगे चना-चबेना, माँगे दूध-मलाई जी।
गर्मी माँगे हवा सुहानी, सर्दी गरम रजाई जी।
टेसू माँगे दीपक बाती, बाँटे ढेर उजाला जी।
सूरज बाँटे ढेरों सोना, खोल धूप का ताला जी।
टेसू गाये गीत रसीले, करता हल्ला-गुल्ला जी।
जाने क्या-क्या गटक गया है, अब माँगे रसगुल्ला जी।
रसगुल्ला कोई मुफ्त न देता, पूरे पैसे लेता जी।
जल्दी ढेर से रुपए दे दो, सौ से कम नहीं लेता जी।

□□□

टेसू जी अगड़ करें, टेसू जी बगड़ करें, टेसू जी तो लैई के टरें।

□□□

इमली की जर ते निकली पतंग, नौ सौ मोती, नौ सौ रंग,
एक रंग मैंने मांग लियो, चढ़ि घोड़ी पर धांग दियो,
दांगी है जी धांगी है, दिल्ली जाहि पुकारौ है,
दिल्ली की है ऊंची कोट, मार सिकंदर पहली चोट,
चोट गई चूल्हे की ओट, फिरंगी बैठो कूंड में, दै सारे के मूंड़ (सिर) में।

□□□

टेसू आए घर के द्वार, खोलो रानी चन्दन किवार ।

□□□

झेंझी आगरे को गेंदा हम से भरोऊ न जाय
झेंझी जा घर की तो चकिया बुरी है
झेंझी हम पीसे तो उड़-उड़ जाय, सास के पीसे भर भर जाय
झेंझी जा घर को तो चूल्हा बुरों है
झेंझी हम फूंके तो बुझ बुझ जाय, सास के फूंके जल जल जाय
झेंझी जा घर को तो अंगना बुरों है
हम झारे तो गंदों होवे, सास के झारे झर झर जाए ।

□□□

झेंझी गीत

झेंझी माता के गीतों मे बन्नी के नाम की जगह झेंझी का नाम लगाकर पारंपरिक गीत गाये जाते है। जैसे-

पड़ रही झेंझी संग भंवरिया, टेसू देवा की।
पहली घूमी, दूजी घूमी, तीजी पे नंबर आयो
टेसू देवा मन ही मन मे अपने कुछ शर्मायो
खिल गई फूलन की फुलवरिया, टेसू देवा की।

तीजी घूमी, चौथी घूमी, पचवीं पे नंबर आयो,
देखि देखि के ऐसी हालत टेसू मन मुस्कायों,
मन मे छूटि रही फुलझड़िया, टेसू देवा की।।

पचवी घूमी, छटवी घूमी, सतवी पे नंबर आयो
झेंझी आगे-आगे चलि भई, टेसू पीछे धायों,
जुड़ि गई झेंझी से चदरिया, टेसू देवा की ।

□□□

झेंझी तो मांगे हरो हरो गोबर, कहाँ से लाऊं मैं हरो हरो गोबर
झेंझी के बप्पा भैसी चराय, वहाँ से लाऊं मैं हरो हरो गोबर,
ले ले झेंझी हरो-हरो गोबर
झेंझी तो मांगे लाल-पीले फुलवा, कहाँ से लाऊं मैं लाल पीले फुलवा
झेंझी का भाई बागों मे जाय, वहाँ से लाऊं मैं लाल पीले फुलवा,
ले ले झेंझी लाल-पीले-
झेंझी तो मांगे दूध बतासा, कहाँ से लाऊं मैं दूध बतासा
झेंझी के चाचा हलवाई घर जाय, वहाँ से लाऊं मैं दूध बतासा,
ले ले...

□□□

लै ले चीकट मटिया कुम्हरा, पर्वत, भवन, बनाव,
रे सुअना पर्वत भवन बनाव।
अच्छों भवन बनैयों रे कुम्हरा द्वि पक्षी द्वि मोर,
रे सुअना द्वि पक्षी द्वि मोर

ननद, भौजाई पनिया को निकरी, धरि गगरी पर लेज
रे सुअना धरि गगरी पर लेज
घाटन घाटन घइला जो फाँसो, घइला गयो है फूट,
रे सुअना घइला गयो है फूट
लहुरी ननदिया तोहरे पैया लागू, घर मा न कहियों जाय,
रे सुअना घर पर न कहियों जाय
लहुरी ननदिया बनि गई टिटहरी, द्वारे से करी है पुकार,
रे सुअना द्वारे से करी है पुकार
सास ने मारो, जिठानी मरवाओ, बहू ने दिये है किवाड़,
रे सुअना बहू ने दिये है किवाड़

□□□

मेरे दरवाजे पढ़ि पढ़ि पोथी बाँचे रे कांगला
मेरे दरवाजे चाँद-सूरज भैया, क्यों आयो रे कांगला
चाँद-सूरज भैया मुझसे कहते -2
तुझको चमकीली साड़ी लाऊंगों, कांगला
चमकीली साड़ी मोय ओढनी न आवै, पहननी न आवे
कौन सी ननद बुलबाऊँ रे कांगला
झेंझी ननद बुलवाऊँ रे कांगला
झेंझी ननद की ऊंची नाक, नीची नाक, काली चोटी, लाल-लाल चुड़ियाँ
वा से मांग भराऊँ रे कांगला ।

□□□

छोटी सी गाड़ी लुढकती जाय, लुढ़कती जाय
देखो बहनी झेंझी चली, झेंझी चली
घाघरो लहराती जाय, चुनरी चमकाती जाय
चुड़िया खनकती जाय, बिछिया बजाती जाय
कर गई ननदी सोलह घाय, सोलह घाय

□□□

सात सीक की बढ़नी, नर सुअना, बांसठ अंगना बुहार रे सुअना,
एक सीक जब टूटी रे सुअना, सास, ननद गारी देवे रे सुअना
काहे को सासू गारी देवे, पीहर से दूँ मंगवाय रे सुअना
नैहर नैहर जिन केर बहुअर, नैहर बसत बड़ी दूर रे सुअना
आइ गए नाई आइ गए वारी, आइ गए विरन हमार रे सुअना
कहाँ बैठे नाई कहाँ बैठे वारी, कहाँ बैठे विरन हमार रे सुअना
द्वारे पे बैठे नाई औ वारी, अँगना में विरन हमार रे सुअना
कहा खाय नाई कहा खाय वारी, कहा खाय विरन हमार रे सुअना
दाल फुलकिया नाई औ वारी, विरन खाय काली नागिन को मांस रे सुअना
पहला कौर जब तोरो रे विरना, बहिना ने पकड़ो हाथ रे सुअना
काहे को बहिना हाथ को पकड़इ, कर्म लिखी जो होय रे सुअना ।

□□□

चाँदनी रात मेरो जेवर टूटो, अब घर कैसे जाय रे सुअना
घरै जो जैहे सास रिसइहै, वन में रहो न जाय रे सुअना
वन में रहिए वन फल खइहै, खइहै महुबिया पान रे सुअना
होंठ रचे जिभिया रचि जाये, रचे बतीसों दाँत रे सुअना
छाती में मोरे धक्का लागो, मोती रहे छहराय रे सुअना
कौन मेरे ये मोती बीने, कौन भरे मेरी माँग रे सुअना
वीरन मेरो मोती बीने, भौजी भरे मेरी माँग रे सुअना ।

□□□

आस पास रौंसा फूलो रे सुअना, बीच में फूली कचनार रे सुअना
ऐसे ही मेरे... भैया फूले, जैसे फूली कचनार रे सुअना ।

□□□

सत्य चाहें कुछ भी हो परन्तु इस बहाने लोगों को एक कलात्मक अभिव्यक्ति का अवसर अवश्य प्राप्त हो जाता है। टेसू खेलना तो महानवमी से आरंभ होता है परन्तु कुम्हार इनका बनाना काफी पहले से आरंभ कर देते हैं। जिन गांवों में कुम्हार नहीं हैं वहाँ अनेक लोग अपने लिये टेसू स्वयं ही बनाते हैं। कुछ वर्ष पूर्व जोर शोर के साथ इस होने वाले धार्मिक कार्यक्रम में हर तबके के बच्चे भाग लेते थे और स्वस्थ मानसिकता के साथ-साथ पैसे इकट्ठे किये जाते थे और उन पैसों से दावत और आतिशबाजी का इतंजाम किया जाता था। इसमें गरीब और अमीर का कोई भेद नही होता था। बढ़ती आधुनिकता व टीवी चैनलों के प्रभाव से यह प्रथा सीमित हो गई है। अब लोग टेसू और झांझी के नाम पर मिलने वाले पैसों को भीख समझने लगते हैं। पहले इसी पैसे को बरकत की निशानी मानते थे। □□